मगनलाल अहीर

एक किसान का शब्दचित्र

हमें कुदरत के इशारे को, उसके द्वारा जाहिर किए गए सत्य को अपनाने में चूकना नहीं चाहिए।

– मगनलाल अहीर

एक वक्त था जब कच्छ के अंजार ब्लॉक में रहने वाले मगनलाल रियायती दरों पर मिलने वाले सरकारी उर्वरकों और कीटनाशकों का धड़ल्ले से इस्तेमाल किया करते थे। शुरुआती सालों में इससे उनकी उपज भी बढ़ी मगर धीरे-धीरे यह उपज गिरने लगी हालांकि अभी भी उनकी खेती घाटे में नहीं थी। कुछ और समय बीतने पर उन्हें दिखाई देने लगा कि अब मिट्टी पहले जितनी नमी नहीं सोख पाती है। उसमें जो सूक्ष्मजीवी होते थे वे मरते जा रहे थे। उन्होंने रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों का रास्ता छोड़कर जैविक खेती के रास्ते पर चलने का फैसला लिया।

नए रास्ते पर चलना कठिन था क्योंकि उनकी मिट्टी औद्योगिक रासायनों की आदी हो चुकी थी। मगनलाल के पास गाय-भैंसें थीं और वह उनके गोबर की खाद से मिट्टी को फिर से पुनर्जीवित करने लगे। बार-बार फसलों को बदलते और कई बार महीनों के लिए कुछ जमीन को खाली भी छोड़ देते थे।

उन्होंने कीट-पतंगों और कीटभक्षियों की कुदरती शृंखला को पुनर्जीवित करने के लिए अपने खेतों के आसपास पेड़ भी उगाए (दाएं)। इसके बाद एक कमाल की चीज हुई - सूक्ष्मजीवी जमीन में लौटने लगे। अब मिट्टी में फिर से पानी ठहरने लगा। उनकी जमीन को पुरानी सेहत हासिल करने में छह से आठ साल का समय तो लगा मगर मगनलाल ने धीरज का दामन नहीं छोड़ा। उन्हीं के मुताबिक, अब उन्हें फिर अपनी खेती से उतनी ही कमाई होने लगी है जितनी तब होती थी जब वे औद्योगिक रसायनों का इस्तेमाल कर रहे थे। अब उन्हें कुदरती चक्र को बहाल होते देख कर एक अलग किस्म का संतोष मिल रहा है।